महात्मा गांधी जी की १५०वीं जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में राजभवन द्वारा आयोजित "गांधीजी के विचार वर्तमान समय में कितने प्रासंगिक है" विषय पर आयोजित संगोष्ठि में गुजरात के राज्यपाल श्री ओ. पी. कोहली जी का संबोधन। (५ अक्टुबर, २०१८)

- आज का कार्यक्रमगुजरात के विद्वतजनों से यह सुनने का कार्यक्रम है कि आज के समय में यदि पूज्य गांधीजी प्रासंगिक है तो किस रूप में प्रासंगिक है और अगर पूज्य गांधीजी के कुछ कार्य बाकी है तो उन अधूरे कार्य को पूरा करने में हम सभी का क्या योगदान हो सकता है। इस विषय पर आप सभी विद्वतजनों से सुनने की मेरी इच्छा है।
- पूज्य गांधीजी बार-बार सच्चे स्वराज शब्द का प्रयोग करते थे तथा स्वराज्य और सच्चे स्वराज्य के बारे में अंतर करके चलते थे। सन् १९४७ में हमें जो स्वराज्य प्राप्त हुआ वो राजनैतिक स्वराज्य था लेकिन वह सच्चा स्वराज्य नहीं था। पूज्य गांधीजी स्वराज्य का एक सकारात्मक तथा सांस्कृतिक आयाम अपने सामने रखकर चलते थे। सन् १९०९ में उन्होंने "हिन्द स्वराज" पुस्तक लिखी थी। इस पुस्तक में उन्होंने पश्चिमी सभ्यता तथा भारतीय सभ्यता के संघर्ष को दृष्टि में रखा था। पश्चिम की भोग प्रधान सभ्यता तथा भारत की नीति प्रधान तथा धर्म प्रधान सभ्यता के बारे में उनकी अपनी मान्यता क्या थी इस बात को हमारे सामने रखा था। पूज्य गांधीजी का यह कहना था कि अंग्रेजों ने यहाँ आकर अपना शासन स्थापित किया लेकिन उनका शासन सिर्फ राजनैतिक शासन नहीं था। वे यहाँ के

लोगों में भोग प्रधान पश्चिमी सभ्यता को हमारे देश के लोगों के जीवन में गहनरूप से उतारना चाहते थे । अगर हमें सच्ची स्वतंत्रता और मुक्ति प्राप्त हुई है तो हमें धर्म प्रधान सभ्यता का वर्चस्व फिर से स्थापित करना होगा । उनकी यह भी कल्पना थी कि जब भारत राजनैतिक दृष्टि से स्वतंत्र हुआ है तो वह सांस्कृतिकदृष्टि से भी स्वतंत्र हो और जब ऐसा होगा तो ही वे समझेंगे कि देश में सच्चा स्वराज्य स्थापित हुआ है।

- पूज्य गांधीजी के सभी कार्यो और विचारों में तीन चीजे बहुत उभरी हुई दिखाई पड़ती है । एक धर्म या नीति या फर्ज । इस पर पूज्य गांधीजी का बराबर आग्रह रहता था । उनकी दूसरी बात यह थी कि उनको पूरा विश्वास था कि लोकशक्ति को जागृत किये बिना कोई परिवर्तन सार्थक नहीं हो सकता । इसीलिए केवल राजशक्ति या शस्त्रशक्ति या भौतिकशक्ति या औद्योगिक शक्ति या आर्थिक शक्ति के बल पर समाज का बदलाव होगा वैसी उनकी मान्यता नहीं थी । वे यह मानकर चलते थे कि हमें लोकशक्ति को उजागर करना होगा । पूज्य गांधीजी की तीसरी अहम बात यह थी जिस पर वे बार-बार ज़ोर देते थे और वह बात यह थी की सच्चा परिवर्तन रचनात्मक कार्यो के द्वारा ही होता है-नतो भाषणों से न तो आंदोलनों से । रचनात्मक कार्य वो होते है जिसमें कोई सर्जन होता है या कुछ रचना होती है जिससे बदलाव आता है । मजे कि बात यह है कि हम जिन बातों को छोटी समझते थे पूज्य गांधीजी उन्हीं बातों को

स्वराज्य प्राप्ति से भी अधिक महत्व देते थे।

- पूज्य गांधीजी की प्रासंगिकताओं का एक उदाहरण में देना चाहूँगा जो मैंने पूज्य गांधीजी की जीवनी में पढ़ा था और मैं उस प्रसंग से काफ़ी प्रभावित हुआ हूँ। पूज्य गांधीजी एक बार वाइसरॉय के साथ बैठे थे । जब भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई बहुत नाजुक दौर से गुजर रही थी उस समय वे दोनों चलते चलते अत्यंत महत्व की चर्चा कर रहे थे। एकाएक गांधीजी ने अपनी घड़ी देखी और वाइसरॉय से कहा कि अब मैं जाऊंगा । बकरी के दूध दोहने का समय हो गया है। इस उदाहरण से हम देख सकते है कि पूज्य गांधीजी के लिये समय की पाबंदी का कितना महत्व था।

- एक दूसरा उदाहरण मैं आपके सामने रखना चाहूँगा। एक बार उनका पुत्र बीमार हुआ । उसका शरीर ज़्वर से तप रहा था ।पूज्य गांधीजी उस वख्त अपने पुत्र पर मिट्टी का लेप लगा रहे थे क्योंकि उन्हें विश्वास था कि मिट्टी के लेप से उनके बेटे का ज़्वर दूर हो जायेगा । पूज्य कस्तूरबा को बहुत गुस्सा आ रहा था कि उनका बेटा कहीं चल न बसे। लेकिन पूज्य गांधीजी की आस्था थी कि प्राकृतिक उपचारों से ही आदमी रोगमुक्त हो सकता है।

- इन दो उदाहरणों से हमें यह बात सीखने को मिलती है कि कुछ चीजों में हमारी आस्था दृढ़ होनी चाहिये जिसके साथ कभी समझौता नहीं करेंगे । पूज्य गांधीजी अपनी दृढ़ आस्थाओं के साथ कभी समझौता नहीं करते थे । उनके

व्यक्तित्व की यह बहुत बड़ी बात है।

- पूज्य गांधीजी की दूसरी विशिष्टता यह थी कि वे हमेशा कमज़ोर वर्गो के लोगों को अपने ध्यान के केन्द्र में रखते थे। इसे आप अंत्योदय भी कह सकते है तथा दरिद्रनारायण का विकास भी कह सकते हैं। पूज्य गांधीजी की एक पुस्तक है"मेरे सपनों का भारत"। इस पुस्तक में पूज्य गांधीजी ने यह बात बहुत स्पष्टरूप से लिखी है कि भारत देश स्वतंत्र हो गया है ऐसा मैं तब मानूँगा जब देश से निर्धनता, निरक्षरता और विषमता समाप्त हो जायेगी। आज हम देखते है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के इतने वर्षो के बाद भी हम निर्धनता, निरक्षरता और विषमता से जूझ रहे हैं। दूसरे शब्दों मे कहा जाये तो पूज्य गांधीजी का सपना अभी पूरा नहीं हुआ है।
- पूज्य गांधीजी अपरिग्रह पर बल देते थे। हमारे जैन धर्म में अपरिग्रह के व्रत पर बहुत बल दिया गया है। अपरिग्रह का मतलब है कि कम से कम चीजों से हम अपने जीवन को चलाये। एक तरफ भोग प्रधान सभ्यता है जो कहती है कि हम संसाधनों का उपयोग बढ़ाते रहे और दूसरी तरफ बात है अपरिग्रह की। गांधीजी अपने जीवन में हमेशा अपरिग्रह के सिद्धांत को लेकर ही चले।
- पूज्य गांधीजी पर श्रीमद् भगवत गीता का बहुत प्रभाव था। गीता के निष्काम कर्म के सिद्धांत को उन्होंने अपने राजनैतिक तथा सामाजिक आंदोलन का आधार बनाया। पूज्य गांधीजी ने भारत की आत्मा को उसके गांवों में

पाया । इसीलिए वह कहते थे कि देश की आत्मा गांवों में बसी है । ऐसे थे हमारे पूज्य गांधीजी जो हमेशा रचनात्मक कार्यो पर बल देते थे।

- पूज्य गांधीजी की १५०वीं जन्म जयंति के वर्ष में जब हम नये भारत को बनाने की बात करते है तथा जब हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी भी New India Vision की बात करते है तो आज के अवसर पर हमें यह सोचना होगा कि हमारे नये भारत के आधार क्या होंगे और उनमें गांधीजी की विचारधारा और उनकी जीवन पद्धति का क्या योगदान रहेगा।
- आज इस विचार गोष्ठी में मेरे साथ तथा मेरे सामने बहुत ही विद्वतजन बैठे है। में सभी को सुनना चाहूँगा और मुझे पूरा विश्वास है कि आज हमें कई ठोस विचार सुनने को मिलेंगे। धन्यवाद।